हमारी बात

साझी विरासत क्या है : यह कैसे बनती है ?

हमने देखा है कि जब-जब ऐतिहासिक और मौजूदा समय और परिवेश के लिहाज़ से संस्कृति की चर्चा की जाती है तो परंपरा, विरासत और रिवाज जैसे शब्द भी खुद-ब-खुद चर्चा में आ जाते हैं। इन शब्दों का मतलब क्या है? और संस्कृति से हमारा क्या अर्थ है? साझी विरासत के साथ संस्कृति का क्या संबंध है? क्या हर संस्कृति बुनियादी तौर पर साझी होती है या कोई ऐसी संस्कृति भी होती है जिसे हम गैर-साझी सांस्कृतिक विरासत कह सकें? संस्कृति हमें विरासत में कैसे मिलती है?

विरासत का मतलब होता है कोई चीज़ विरसे में पाना। विरासत और उत्तराधिकार जैसे शब्द हमें बीते कल का अहसास करते हैं। इसके साथ ही ये शब्द इस बात का भी बोध कराते हैं कि हमारे अतीत का कुछ हिस्सा या पूरा का पूरा अतीत आज भी हमारे पास मौजूद है। जब हम सांस्कृतिक विरासत की बात करते हैं तो आमतौर पर हम अतीत की संस्कृति के उन पहलुओं का ज़िक्र कर रहे होते हैं जो या तो हमारे पास मौजूद हैं या जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। संस्कृति के यही पहलू हमारी सम्पत्ति और हमारे संसाधन हैं। साझे का आशय एक विशेष किस्म की संस्कृति से है जो मिली-जुली है, खंडित नहीं है। कोई संस्कृति, साझी होने के अलावा पृथक या विखंडित या गैर-साझी भी हो सकती है। ध्यान देने वाली बात यह है कि कोई भी संस्कृति न तो पूरी तरह साझी होती है और न ही पूरी तरह गैर-साझी। हर संस्कृति में कुछ ऐसे तत्व होते हैं जो दूसरी संस्कृतियों से मिलते-जुलते होते हैं, जिन्हें हम साझा सांस्कृतिक तत्व कह सकते हैं, जबकि उसके कुछ तत्व उसकी अपनी खासियत होते हैं, जो प्रायः औरों में नहीं पाए जाते।

संस्कृति को व्यवहारों और तौर-तरीकों के एक ऐसे समुच्चय के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसमें हमारा ज्ञान, हमारी मूल्य-मान्यताएं और नैतिकता, कानून, रीति-रिवाज़, जीवनशैली और ऐसी सभी क्षमताएं और आदतें शामिल होती हैं जो हमें समाज का हिस्सा होने के नाते मिलती हैं। किसी खास समाज की संस्कृति को समझने का एक तरीका यह भी है कि हम उसकी जीवनशैली (आहार, वेशभूषा, बोली, रीति-रिवाज़ आदि), सांस्कृतिक उत्पादों (कला एवं शिल्प, संगीत, नृत्य, सौंदर्यशास्त्र आदि) और नैतिकता (नीतिशास्त्रीय अवधारणाएं, आदर्श अच्छे और बुरे की समझ, अपेक्षित और अनपेक्षित आदि) का अध्ययन करें। ये तीनों चीज़ें उस जटिल समुच्चय का अभिन्न हिस्सा हैं जिसे संस्कृति कहा जाता है। ध्यान देने वाली बात यह है कि इन तीनों चीज़ों को मनुष्य तभी व्यवहार में ला सकते हैं जब वह किसी समाज के सदस्य हों। समाज के बिना, अकेले रहने पर उनकी क्षमता

सीमित हो जाती है। इसीलिए हम कह सकते हैं कि संस्कृति किसी की व्यक्तिगत नहीं बल्कि एक पूरे समूह या समाज की परिघटना होती है। जब हम एक साझी संस्कृति की बात करते हैं तो हमारा आशय इस बात से होता है कि संस्कृति के पहलुओं में एक साझापन मौजूद था और वह अभी भी कायम है।

भारतीय संस्कृति की साझी विरासत हमारे इतिहास और हमारे हालात की एक अनूठी उपज है। हमें यह विरासत इतिहास की एक लंबी निरंतरता के ज़रिए हासिल हुई है। इस विरासत को 'सत्ता के मूल्यों' और 'मानवीय मूल्यों' इन दोनों पदों के ज़रिए समझना चाहिए। कहने का मतलब यह है कि इस विरासत को यह खास शक्ल देने में हमारे आम लोगों और शासकों, दोनों ने अपने-अपने हिस्से का योगदान दिया है। इस विरासत का एक अहम पहलू उसका समन्वयी और बहुलतावादी स्वरूप रहा है।

भारत की साझी विरासत के इन आयामों को कुछ ऐसे प्रतीकों की मदद से और अच्छी तरह समझा जा सकता है जो भारत कही जाने वाली इस इकाई के सार को उजागर करते हैं। इस लिहाज़ से किसी देश या भौगोलिक इलाके का नाम ही एक अहम प्रतीक हो सकता है। कोई भी देश अपना नाम या तो वहां रहने वाले लोगों के नाम से ग्रहण करता है या उसका नाम किसी महत्वपूर्ण भौतिक आयाम पर आधारित होता है। उदाहरण के लिए हमारे देश भारत को ही लें। भारत को इंडिया, जम्बूद्वीप, आर्यावर्त, हिन्दुस्तान अनके नामों से जाना जाता है। इन सभी नामों का उदय यहां के पर्यावरण, आबोहवा, इलाके से हुआ है। मसलन 'इंडिया' शब्द सिंधु नदी के दक्षिण में पड़ने वाले क्षेत्र के नाम से आता है। धीरे-धीरे यह नाम सिंध के इलाके से बहुत दूर तक फैल गया। इस विवरण से पता चलता है कि 'इंडिया' शब्द इस उपमहाद्वीप के सभी समाजों की एक महान विरासत का प्रतिनिधित्व करता है। यह एक सकारात्मक नाम है और इस इलाके और यहां के लोगों की भौगोलिक, सांस्कृतिक और भौतिक पहचान का एक स्पष्ट प्रतीक है। इसी तरह शब्द 'जम्बू द्वीप' जो भारत का दूसरा नाम है, का उदय हुआ। 'जम्बू' शब्द का मतलब होता है जामुन (जामुन का पेड़ या फल, दोनों) और 'जम्बू द्वीप' का आशय संभवतः किसी ऐसे द्वीप से रहा होगा जहां जामुन के पेड़ बहुतायत में पाए जाते थे। यह नाम भारत को उसके एक विख्यात शासक, सम्राट अशोक ने दिया था। 'आर्यावर्त' नाम का शाब्दिक अर्थ होता है— आर्यों की भूमि। यह नाम इस देश पर विजय प्राप्त करने वाले आर्यों ने दिया था। 'हिंद' या 'हिंदुस्तान' नाम शुरूआती मुस्लिम शासकों ने दिया था।

इतिहास के अलग-अलग चरणों में हमारे देश को मिले अलग-अलग नाम इस देश के इतिहास की जटिलता और बहुलता का आईना हैं। इन नामों से अलग-अलग भाषायी प्रभावों (लैटिन, ग्रीक, संस्कृत, अंग्रेज़ी और फ़ारसी), विभिन्न शासकों (आर्य, बौद्ध और मुस्लिम) और समुदायों (भारत समुदाय) के नाना प्रयासों और देश को पहचानने के अलग-अलग मानदंडों (यहां की आबोहवा, भौगोलिक सीमा) आदि का पता चलता है। बहरहाल, अब ये सारे नाम चलन में हों या न हो, मगर कुल मिलाकर यह सभी एक ही इकाई का प्रतिनिधित्व करते हैं।

– खुर्शीद अनवर